ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 118-121
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

मालवीय जी के शैक्षिक विचारों का प्रतिबिंबन : एनईपी–2020 के आईने में

डॉ0 धनंजय झा
एम.ए., पीएच.डी. (राजनीति विज्ञान) एम.एड, यूजीसी–नेट, पीएच.डी. (शिक्षाशास्त्र) (बिहार) भारत

Received-07.02.2024, Revised-15.02.2024, Accepted-20.02.2024 E-mail: dhananjayjha502@gmail.com

सारांशः *स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय शिक्षा में गुणात्मक विकास एवं संवर्धन हेतु भारत सरकार ने समय–समय पर विभिन्न शिक्षा नीतियों का निर्माण किया। स्वतंत्र भारत की प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण वर्ष 1968 में किया गया। इस शिक्षा के द्वारा शिक्षा में गुणवत्ता के समावेशन को बढ़ावा देने के लिए कई ठोस कदम भी उठाए गए। वर्ष 1986 में पुनः नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति तत्पश्चात् 1992 में संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सिफारिशों को शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तावित किया गया। 34 वर्ष बाद पुनः 2020 में भारत सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति को प्रस्तुत किया गया। इसमें भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्र बिन्दु मानते हुए शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय मूल्यों, विश्वासों, मानकों, विचारों तथा आदर्शों को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए व्यापक परिवर्तन करने के सिफारिशों को प्रस्तुत किया गया। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्ता प्रखर राष्ट्रवादी, महान दार्शनिक तथा उच्च कोटि के शिक्षाशास्त्री पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शैक्षिक विचारों में दृष्टिगोचर होती है। इस आलेख में मालवीय जी के शैक्षिक विचारों को एनईपी 2020 में दिए गए सिफारिशों के दृष्टिकोण से अन्वेषित किया गया है जिसके परिणामस्वरूप यह पाया गया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विभिन्न अध्यायों में वर्णित शिक्षा संबंधी सिफारिश मालवीय जी के शिक्षा दर्शन तथा शैक्षिक सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– ***गुणात्मक विकास, संवर्धन, शिक्षा नीतियों, गुणवत्ता, समावेशन, सिफारिशों, मूल्यों, विश्वासों, मानकों, विचारों।***

भारतवर्ष में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक अनेक महान विभूतियों ने जन्म लिया और इन महान विभूतियों ने अपने सामाजिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व के द्वारा अज्ञानता के अंधकार से भरे समाज को समय–समय पर न केवल ज्ञान रूपी प्रकाश से एक नई राह दिखाई वरन समाज के पुनर्निर्माण में महती भूमिका भी अदा की है। इन महान विभूतियों के द्वारा विरचित ज्ञान, इनके चरित्र और आचरण तथा इनके द्वारा स्थापित आदर्शों एवं मूल्यों ने समय–समय पर मानवीय सभ्यता को श्रेष्ठता की पराकाष्ठा तक पहुँचाने के लिए नूतन मार्ग भी अख्तियार किया है। प्रगतिशील समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, श्री अरबिंद, रामकृष्ण परमहंस, गिजूभाई बधेका तथा स्वामी विवेकानंद जैसे महान दार्शनिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों ने अपने दार्शनिक विचारों से शिक्षा की ज्योति को और अधिक प्रज्जवलित किया है। इन्हीं विभूतियों में महान दार्शनिक एवं समाजसेवी तथा शिक्षा के अग्रदूत पंडित मदन मोहन मालवीय जी के शिक्षा दर्शन का शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी स्थान रहा है। मालवीय जी का जन्म 25 दिसम्बर, 1861 को प्रयाग में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित ब्रजनाथ तथा माता का नाम मूनादेवी था। मालवीय जी अपने सात भाई–बहनों में से पाँचवें पुत्र थे। मध्य प्रदेश के मालवा प्रान्त से प्रयाग आकर बसे। उनके श्रीगोड ब्राह्मण पूर्वज मालवीय कहलाते थे। जिसके कारण इन्होंने भी यही उपनाम धारण कर लिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आई विभिन्न शिक्षा नीतियों जिनमें प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा 1968, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1992 शामिल हैं, में भारतीय शिक्षा में सुधार हेतु अनेक सिफारिश प्रस्तुत किए गए। लेकिन 34 वर्ष बाद आई तीसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विषय–वस्तु के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि एनईपी 2020 शिक्षा के भारतीय मानकों, मूल्यों, विचारों, आदर्शों, आवश्यकताओं तथा व्यवहारों के एक समेकित प्रतिमान को आत्मसात किए हुए है। भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में उपरोक्त प्रतिमान को स्वीकारने के प्रबल समर्थक पंडित मदन मोहन मालवीय जी रहे हैं।

पंडित मदन मोहन मालवीय के शिक्षा दर्शन में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों तथा आधुनिक तकनीकी के विकास का अद्भूत समन्वय दिखाई पड़ता है। आज हम भारतीयों के सम्मुख एक ऐसी शिक्षा नीति आई है, जो ऐसे सशक्त एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की बुनियाद रखती है, जिसमें भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों का अदभुत समावेश है। एनईपी 2020, 21 वीं शताब्दी की शिक्षा के लिए आकांक्षापूर्ण लक्ष्यों जिनमें सतत विकास लक्ष्य (सस्टेनेबल डवलपमेंट गोल) है, के संयोजन में शिक्षा के सभी पक्षों में सुधार एवं पुनर्गठन के लिए प्रतिबद्ध है। यह शिक्षा नीति प्रसिद्ध भारतीय दार्शनिक विचारकों तथा शिक्षाशास्त्रियों के स्वप्न को साकार करने का रूख अख्तियार करती है। ऐसे ही महान आदर्शवादी विचारक और शिक्षाशास्त्री पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचारों की चर्चा एनईपी 2020 के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है, जिन्होंने एक ऐसे आत्मनिर्भर भारत का सपना देखा जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों को सहेजते हुए वैश्विक स्तर पर आधुनिक विज्ञान और तकनीकि की दृष्टि से अग्रणी हो।

मालवीय जी के अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा सम्बन्धी विचार का एनईपी– 2020 में प्रतिबिंबन– मालवीय जी के अनुसार प्रारंभिक विद्यालयों में सभी बच्चों के लिए निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान होना चाहिए। उनका कहना था कि "यदि देश का अभ्युदय चाहते हो तो वह सब प्रकार के यत्न करो कि देश में कोई भी बालक या बालिका निरक्षर न रहे।"[1] इसी दिशा में कदम बढ़ाते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अपने द्वितीय अध्याय में, विद्यालयी शिक्षा को संबोधित करते हुए बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सीखने के लिए एक तात्कालिक आवश्यकता और पूर्व शर्त मानती है। इसमें स्पष्ट कहा गया है कि उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त करना शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता होगी जिसमें 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान का लक्ष्य रखा गया है।[2] एनईपी 2020 के पेश 3.1 में सभी स्तरों पर शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच को सुनिश्चित करने की सिफारिश की गई है,

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

जिसमें ड्रॉप आउट हुए बच्चों को पुनः शिक्षा व्यवस्था में शीघ्र वापसी को प्राथमिकता दी जाएगी।

मालवीय जी के सर्वांगीण विकास सम्बन्धी विचार का एनईपी– 2020 में प्रतिबिंबन– मालवीय जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक, मानसिक, धार्मिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास करना है।[3] एनईपी–2020 के प्रथम अध्याय में शिक्षा के उपरोक्त उद्देश्यों को चिह्नित कर 5+3+3+4 पर आधारित एक ऐसी नई शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन की बात कही गई है जिसमें प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई) को सीखने की नींव के रूप में देखा गया है। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के अंतर्गत मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, खेल आधारित, गतिविधि आधारित शिक्षा के साथ–साथ सामाजिक स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित किया गया है।[4] इसका समग्र उद्देश्य बच्चों के भौतिक–शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास के साथ–साथ संवाद हेतु प्रारंभिक भाषा तथा साक्षरता का विकास करना है।

मालवीय जी का शारीरिक विकास के संबंध में स्पष्ट तौर पर मानना था कि दुर्बल शरीर वाले व्यक्ति सबल राष्ट्र का निर्माण कदापि नहीं कर सकते। 'मेरा बचपन' नामक लेख में मालवीय जी ने आहार, शयन और ब्रह्मचर्य को स्वास्थ्य के तीन महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में स्वीकार किया है। एनईपी 2020 के प्रथम पेश 1.6 तथा पैरा 2.9 में, बच्चों के आहार, पोषण और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। जिसमें मध्याह्न भोजन कार्यक्रम को प्राथमिक विद्यालय के साथ–साथ तैयारी कक्षाओं (प्रपिरेटरी क्लासेज) तक भी विस्तारित करने की योजना है।[5] पौष्टिक भोजन के साथ–साथ नियमित स्वास्थ्य जाँच, 100 प्रतिशत टीकाकरण के लिए नियमित स्वास्थ्य जाँच तथा इसकी निगरानी के लिए हेल्थ कार्ड जारी करने की महत्वपूर्ण योजनाएँ भी एनईपी 2020 में समाहित है। (मालवीय जी के पाठ्यक्रम संबंधी विचार का एनईपी– 2020 में प्रतिबिंबन)

मालवीय जी ने यह महसूस किया कि संकुचित पाठ्यक्रम के जरीये राष्ट्रीय उद्देश्यों को कदापि हॉसिल नहीं किया जा सकता। प्रत्येक समाज और देश अपनी आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम निर्धारित करता है। अतः उन्होंने लचीले पाठ्यक्रम को अपनाया तथा देश के विकास हेतु आधुनिक विज्ञान की शिक्षा पर विशेष जोर दिया। इसके अतिरिक्त मालवीय जी ने कहा कि पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जिससे बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास सुनिश्चित हो तथा वह भविष्य में आत्मनिर्भर भी बन सके।[6] इस संदर्भ में एनईपी 2020 की संस्तुतियाँ मालवीय जी के शैक्षिक विचारों का गहराई से समर्थन करती हुई प्रतीत होती है। एनईपी 2020 में विद्यार्थियों के विकास की अलग–अलग अवस्थाओं के अनुसार 5+3+3+4 पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। यह पाठ्यक्रम लचीला होने के साथ ही विद्यार्थियों के समग्र विकास को भी समावेशित किए हुए है। एनईपी 2020 में गतिविधि आधारित ई.सी.सी.ई. पाठ्यक्रम, कुछ हद तक औपचारिक फाउंडेशन पाठ्यक्रम, अनुभव आधारित और अमूर्त अवधारणाओं पर आधारित मिडिल स्टेज पाठ्यक्रम तथा चार साल का बहुविषयक उच्चतर माध्यमिक अध्ययन तथा विषय के चुनाव के लचीलेपन की योजना एक ऐसे मनोवैज्ञानिक पदानुक्रम को प्रदर्शित करती है, जिससे शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और 21वीं शताब्दी के कौशल से सुसज्जित करना होगा।[7]

पाठ्यक्रम के संदर्भ में मालवीय जी ने बुनाई, रंगाई, धुलाई, धातु कर्म, काष्ठकला, मीनाकारी आदि की शिक्षा पर जोर दिया। एनइपी– 2020 के पैरा 4.26 में इस संदर्भ में मिडिल स्तर पर एक ऐसे लचीले पाठ्यक्रम को शामिल करने की बात कही गई है जिसके अंतर्गत महत्वपूर्ण व्यावसायिक शिल्प, जैसे– बढ़ईगिरी, बिजली का काम, धातु का काम, बागवानी, मिट्टी के बर्तनों का निर्माण आदि काम अपने हाथों से करने का अनुभव प्रदान किया जाएगा। इसमें आगे कक्षा 6 से 8वीं कक्षा में पढ़ने के दौरान सभी विद्यार्थी 10 दिन के बसता रहित पिरीरियड में स्थानीय व्यावसायिक विशेषज्ञों, जैसे– बढ़ई, माली, कुम्हार, कलाकार आदि के साथ प्रशिक्षु के रूप में काम करेंगे। इसके साथ–साथ मालवीय जी ने चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद, नक्षत्र विज्ञान, भाषा आदि सभी की शिक्षा पर जोर दिया, जिससे विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकें। वे एक ऐसा संवर्धित प्राठ्यक्रम चाहते थे जिसमें प्राचीन भारतीय आयुर्वेद के साथ आधुनिक शल्यशास्त्र का मेल, आयुर्वेदिक औषधियों का वैज्ञानिक परीक्षण, विभिन्न विषयों पर प्राच्य और पाश्चात्य ज्ञान का तुलनात्मक और समन्वयात्मक अध्ययन, दर्शनशास्त्र, वेद–वेदांग तथा संस्कृत साहित्य की शिक्षा के अतिरिक्त इंजीनियरिंग, कृषि विज्ञान, धातु विज्ञान तथा आधुनिक ज्ञान–विज्ञान का अध्ययन सम्मिलित हो।[8]

मालवीय जी के ललितकलाओं सम्बन्धी विचार का एनईपी– 2020 में प्रतिबिंबन– मालवीय जी चाहते थे कि विद्यालय में संगीत, काव्य, नाट्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला आदि ललित कलाओं की शिक्षा का भी प्रबंध हो। उनके विचार में कला विहीन जीवन शुष्क और नीरस होता है।[9] मालवीय जी के उक्त विचार एनईपी 2020 के पैरा 4.7 तथा 4.8 में प्रतिबिंबित होता है, जिसमें विद्यालयी शिक्षा के सभी चरणों में प्रयोग आधारित अधिगम की बात कही गई है, जो कला समन्वय तथा खेल समन्वय जैसी क्रॉस करिकुलर शैक्षणिक दृष्टिकोण को परिलक्षित करता है।[10] इसमें विविध विषयों की संकल्पनाओं को अधिगम आधार के रूप में कला और संस्कृति के विभिन्न अवयवों द्वारा समझा जाता है, जहाँ एक ओर कला समन्वित शिक्षण बच्चों को भारतीय कला और संस्कृति से अवगत कराएगा वहीं दूसरी ओर खेल समन्वय शिक्षण बच्चों के स्वास्थ्य के साथ–साथ संबंधित जीवन कौशल को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा।

मालवीय जी के भारतीय ज्ञान परम्परा संबंधित विचार का एनईपी–2020 में इनका प्रतिबिंबन– मालवीय जी द्वारा स्थापित काशी हिंदू विश्वविद्यालय शिक्षा से संबंधित उनके सपनों एवं उद्देश्यों को साकार करता है। शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से स्थापित यह विश्वविद्यालय अपने आप में कई महत्वपूर्ण विशेषाताओं को समाहित किए हुए है। इस विश्वविद्यालय में न केवल अंग्रेजी साहित्य, आधुनिक मानविकी, समाज विज्ञान और विज्ञान का अध्ययन–अध्यापन होता है, 'अपितु हिंदू धर्म, विज्ञाम, भारतीय इतिहास एवं संसकृति के साथ–साथ विभिन्न प्राच्य विद्याओं का अध्ययन–अध्यापन भी किया जाता है, जो कि संस्थान की एक अनुठी विशेषता है।'[11] यहाँ दर्शनशास्त्र के विद्यार्थियों को कांट और हीगल के साथ–साथ अनिवार्य तौर पर कपिल और शंकर के सिद्धांतों का भी अध्ययन

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

करना होता है। एनईपी 2020 मालवीय जी की भारतीय ज्ञान–विज्ञान एवं दर्शन के प्रति प्रेमदृष्टि को व्यापक रूप से मूर्त रूप प्रदान करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पैरा 4.27 में स्पष्ट रूप से वर्णित है कि 'भारत का ज्ञान' में आधुनिक भारत और उसकी सफलताओं तथा चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और उसका योगदान शामिल होगा। इसके अंतर्गत पूरे विद्यालयी पाठ्यक्रम मे ही भारतीय ज्ञान परंपरा, विशेष रूप से आदिवासी ज्ञान एवं सीखने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीकों को समावेशित करते हुए गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, प्रौद्योगिकी, भाषा विज्ञान सहित राजव्यवस्था संरक्षण आदि विषयों को भी शामिल किया जाएगा।[12] भारतीय ज्ञान परंपरा पर एक आकर्षक पाठ्यक्रम भी माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षार्थियों के लिए विकल्प के रूप में उपलब्ध होगा, जो निश्चय ही प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान–विज्ञान की परंपरा को और अधिक संरक्षित एवं संवर्धित कर भारत को वैश्विक स्तर पर सशक्त बनाएगा।

मालवीय जी के उच्च शिक्षा सम्बन्धी विचार का एनईपी– 2020 में प्रतिबिंबन– मालवीय जी द्वारा उच्च शिक्षा कौशल के लिए निर्धारित किए गए विशेष उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. सांस्कृतिक उद्देश्य
2. भारतीय कला कौशल का पुनरूत्थान करना; और
3. कला और विज्ञान में शोध कार्यों को बढ़ावा देना।

मालवीय जी विश्वविद्यालयों में अन्वेषण और प्रयोगात्मक कार्य पर आधारित विज्ञान और कौशल की शिक्षा के पक्षधर थे, जिसमें तकनीकी ज्ञान का ऐसा समावेशन हो जिससे देश की बेकारी और औद्योगिक अवनति को दूर किया जा सके।[13] मालवीय जी विश्वविद्यालयी शिक्षा में कृषि शिक्षा, संगीत एवं ललित कलाओं की शिक्षा, चरित्र निर्माण की शिक्षा सहित ऐसी शैक्षिक व्यवस्था को स्थापित करना चाहते थे जो भारतीय परंपरा से संबद्ध होते हुए राष्ट्र को वैश्विक पटल पर एक उत्पादक, प्रगतिशील, सुसंस्कृत एवं समृद्ध राष्ट्र के रूप में प्रतिबिंबित कर सके।[14] एनईपी 2020 के नवम् अध्याय में मालवीय जी के उच्च शिक्षा संबंधी विचारों का प्रभावपूर्ण प्रतिबिंबन किया गया है। पैरा 9.1.1. में गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा के संदर्भ में विभिन्न तकनीकी और व्यावसायिक विषयों को सम्मिलित कर 21वीं शताब्दी में मानवीय क्षमताओं को विकसित करने जोर दिया गया है।[15] साथ ही चारित्रिक, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, रचनात्मकता, सेवा–भावना जैसे गुणों के विकास को भी रेखांकित किया गया है, जो मालवीय जी के व्यक्तित्व के समग्र विकास तथा राष्ट्रीय भावना विकास संबंधी उद्देश्यों से पेरित है।

मालवीय जी के 'लचीलेपन पाठ्यक्रम' का उल्लेख करते हुए यह शिक्षा नीति पैरा 10.2 उच्चतर शिखा के प्रेमवर्क के बारे में सबसे बड़ी अनुशंसा बड़े एवं बहुविषयक विश्वविद्यालयों और उच्चतर शिक्षा संस्थान, संकुलों के संबंध में करती है, जिससे भारत बहुमुखी प्रतिभा वाले योग्य और अभिनव व्यक्तियों का निर्माण कर अपनी प्राचीन विश्वविद्यालयी (तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, कांची, नदिया, उदयन्तपुरी अथवा ओदंतपूरी या उदन्तपुरी और विक्रमशिला) परंपरा को वापस लाकर एक शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक दृष्टि से अखंड और सशक्त भारत बनने में समर्थ होगा।[16] यह बिंदु मालवीय जी की भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान तथा शिक्षा में परंपरागत और आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के समन्वय की दृष्टि को मूर्त रूप प्रदान करता है।

मालवीय जी के विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा सम्बन्धी विचार का एनईपी– 2020 में प्रतिबिंबन– विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा के संबंध में मालवीय जी जापानी, फ्रेंच तथा डेनिश भाषा के तकनीकी ज्ञान से अत्यंत प्रभावित थे तथा उसी तर्ज पर भारतीय विज्ञान और तकनीकी शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन चाहते थे।[17] एनईपी– 2020 मालवीय जी के तकनीकी शिक्षा संबंधी विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान करती है एवं अध्याय 23 तथा 24 में तकनीकी के उपयोग तथा एकीकरण पर विस्तार से चर्चा करती है। इसमें ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, (आर्टिफिसियल इंटेलीजेन्स) डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, आभासी प्रयोगशालाएँ, डिजिटल रिपोजिटरी, मिश्रित अधिगम प्रतिमान जैसे तकनीकी नवाचारों को अनुशंसा कर विद्यालयी तथा विश्वविद्यालयी शिक्षा व्यवस्था का एक विकासात्मक गति प्रदान की गई है।[18]

निष्कर्ष– तमाम बातों के विश्लेषणोपरान्त हमें यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि विस्तृत विचार–विमर्श के पश्चात् लाई गई एनईपी– 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में क्रॉंतिकारी परिवर्तन लाने जा रही है। साथ ही एनइपी 2020, पंडित मदन मोहन मालवीय जी के संपूर्ण शैक्षिक विचारों को अपने आप में समेटे हुए है। यह शिक्षा नीति उनके जीवन दर्शन तथा शैक्षिक विचारों का यथार्थ रूप में साक्षात्कार कराती है जो निश्चय ही भारतीय ज्ञान विज्ञान एवं सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित–संवर्धित करते हुए वैश्विक पटल पर उच्च शैक्षिक प्रतिमान स्थापित करने पर जोर देती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ज्योति, मदन मोहन मालवीय एंड हिज विजिन टुवर्ड्स एजुकेशन–ए स्टडी, ग्लोबस जर्नल ऑफ प्रोग्रेसिव एजुकेशन, 2014, 4(1).
2. शर्मा, शशि, "निपुण भारत मिशन" (प्राथमिक शिक्षा), राष्ट्रीय शिक्षानीति– 2020, योजना, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष 66, अंक 02, फरवरी 2022, पृ. 30.
3. चौधरी, जी. मैनेजमेंट ऑफ वैल्यू बेस्ड एजुकेशन एंड स्पीरिचुअलिटी, ए प्रैक्टिकल एप्लीकेशन बाई महामना मालवीय जी इन बी.एच.यू., इंटरनेशन जर्नल ऑफ इंग्लिश, लैंग्वेज, लिट्रेचर एंड ह्यूमेनिटीज, 2014, 1(4).
4. शर्मा देशराज, "प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति" संपादित, अतुल कोठारी, राष्ट्रीय शिक्षा

नीति–2020 भारतीयता का पुनरुत्थान (सं.), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022 पृ. 34–38.

5. कुमार, नरेश, "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा", भारतीय आधुनिक शिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, वर्ष–41, अंक 02, अक्टूबर 2022, पृ० 9.
6. प्रसाद, एम. और जी. एस. गुप्ता, द कंट्रीब्यूशन ऑफ पंडित मदन मोहन मालवीय फॉर हायर एजुकेशन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड एप्लाइड रिसर्च, 2013, 3(1).
7. सिंह, अविनाश कुमार, "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020", योजना, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष 66, अंक 02, फरवरी 2022, पृ० 7–9.
8. सिंह, एस., एजुकेशन थॉट्स ऑफ मालवीय एंड टैगोर– ए क्रिटिकल एनालिसिस, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज, आर्ट्स, मेडिसिन एंड साइंस, 2017, 5 (1).
9. पूर्वोक्त।
10. भारती, ओमप्रकाश, "राष्ट्रीय शिक्षा नीति और ललित कलाएँ", मनोज कुमार एवं अनिल कुमार राय (सं.), राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 क्रियान्वयन के सूत्र, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, 2021, पृ० 157–160.
11. पूर्वोक्त।
12. सिंह, गीता, "भारतीय ज्ञान परम्परा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में प्रासंगिकता", अरहत मल्टीडिसीप्लीनरी इंटरनेशनल एजुकेशन रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम–XI, इशू नं. 1, जनवरी–फरवरी 2022, पृ. 8–12.
13. उपरोक्त।
14. सिंह, पी. और एस. सिंह, मालवीय एज ए ग्रेट विजनरी फॉर हायर एजुकेशन–सेलिब्रेटिंग हिज 150 बर्थडे, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साईटिफिक एंड रिसर्च पब्लिकेशंस, 2012, 2(3).
15. मित्तल, पंकज, "राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 : उच्च शिक्षा की संभावनाएँ", अतुल कोठारी (सं.), राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020, भारतीयता का पुनरुत्थान, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृ० 52–60.
16. उपरोक्त।
17. उपरोक्त।
18. सहस्रबुद्धे, अनिल, "आत्मनिर्भर भारत के लिए तकनीकी शिक्षा", अतुल कोठारी (सं.), राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भारतीयता का पुनरुत्थान, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृ० 80–87.

*****